



वैदिक ज्योतिष (Jyotish) में, यद्यपि प्रत्येक ग्रह आपके भाग्य को आकार देने में एक भूमिका निभाता है, लेकिन एक ग्रह आपके जीवन की नाव के कप्तान के रूप में अन्य सभी से ऊपर खड़ा होता है - लग्नेश (लग्न का स्वामी)।

अपने लग्नेश के बल और स्थिति का मूल्यांकन किए बिना, जन्म कुंडली (Kundli) का विश्लेषण अधूरा रहता है। यह व्यक्तिगत सफलता, स्वास्थ्य और जीवन शक्ति के लिए सबसे महत्वपूर्ण ग्रह है।

लग्नेश का क्या अर्थ है?

लग्नेश शब्द दो संस्कृत शब्दों का मेल है:

• **लग्न** = उदय लग्न (प्रथम भाव / स्वयं)

• **ईश / ईशा** = स्वामी या अधिपति

अतः, आपके प्रथम भाव (लग्न राशि) के स्वामी ग्रह को लग्नेश कहा जाता है। उदाहरण के लिए, यदि आपकी लग्न राशि मेष (Mesha) है, तो इसका स्वामी ग्रह मंगल (Mangal) आपका लग्नेश बन जाता है। यदि आपकी लग्न राशि वृषभ (Vrishabha) है, तो शुक्र (Shukra) आपका लग्नेश है।

लग्नेश इतना महत्वपूर्ण क्यों है?

1. आपके मूल भौतिक अस्तित्व और आत्मा के उद्देश्य का प्रतिनिधित्व करता है: आपका लग्नेश आपका प्रतिनिधित्व करता है - आपका भौतिक शरीर, समग्र स्वास्थ्य, आत्म-छवि, मानसिकता और प्राण शक्ति (Prana)। जबकि अन्य ग्रह जीवन के बाहरी क्षेत्रों (जैसे करियर, जीवनसाथी या भाई-बहन) का प्रतिनिधित्व करते हैं, लग्नेश उस वास्तविक व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है जो उन घटनाओं का अनुभव कर रहा है।

2. कुंडली का आधार स्तम्भ: भले ही जन्म कुंडली में भारी दोष या कठिन योग हों, एक मजबूत और शुभ स्थिति में स्थित लग्नेश एक ब्रह्मांडीय जीवन-रक्षक की तरह कार्य करता है। यह आपको जीवन की बाधाओं को दूर करने और असफलताओं के बाद फिर से उठ खड़े होने का लचीलापन, सहनशक्ति और इच्छाशक्ति प्रदान करता है।

3. दर्शाता है कि आपके जीवन का ध्यान कहाँ केंद्रित है: आपका लग्नेश जिस भी भाव में बैठता है, वह यह प्रकट करता है कि आपकी मानसिक ऊर्जा, ध्यान और जीवन के सबक स्वाभाविक रूप से कहाँ केंद्रित होंगे।

• **उदाहरण:** यदि आपका लग्नेश दशम भाव में स्थित है, तो करियर और सार्वजनिक मान-प्रतिष्ठा आपके जीवन की प्रमुख प्रेरक शक्ति होगी।

अपने लग्नेश को कैसे पहचानें

- **मेष (Mesha):** मंगल (Mangal)
- **वृषभ (Vrishabha):** शुक्र (Shukra)
- **मिथुन (Mithuna):** बुध (Budh)
- **कर्क (Karka):** चंद्रमा (Chandra)
- **सिंह (Simha):** सूर्य (Surya)
- **कन्या (Kanya):** बुध (Budh)
- **तुला (Tula):** शुक्र (Shukra)
- **वृश्चिक (Vrishchika):** मंगल (Mangal)
- **धनु (Dhanu):** गुरु (Guru)
- **मकर (Makara):** शनि (Shani)

- कुंभ (Kumbha): शनि (Shani)
- मीन (Meena): गुरु (Guru)

लग्नेश के मजबूत या कमजोर होने का निर्धारण क्या करता है?

एक मजबूत लग्नेश के लक्षण:

- त्रिकोण (1, 5, 9वें) या केंद्र (1, 4, 7, 10वें) भाव में स्थित होना।
- अपनी उच्च राशि या स्वराशि में स्थित होना।
- गुरु या शुक्र जैसे शुभ ग्रहों से सकारात्मक दृष्टि (Drishti) प्राप्त करना।
- परिणाम: उच्च ऊर्जा, मजबूत रोग प्रतिरोधक क्षमता, व्यक्तिगत आत्मविश्वास और स्वाभाविक नेतृत्व क्षमता।

एक पीड़ित या कमजोर लग्नेश के लक्षण:

- त्रिक / दुस्थान भाव (6ठे, 8वें या 12वें) में स्थित होना।
- अपनी नीच राशि में बैठना या अत्यधिक अस्त होना (सूर्य के बहुत करीब होना)।
- शुभ ग्रहों के संरक्षण के बिना राहु, केतु या शनि की क्रूर दृष्टि से पीड़ित होना।
- परिणाम: आत्मविश्वास में कमी, शारीरिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं, दिशाहीन महसूस होना या लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अतिरिक्त प्रयास की आवश्यकता।

निष्कर्ष

अपनी जन्म कुंडली को एक देश के रूप में समझें। भाव उसके विभाग हैं, लेकिन लग्नेश प्रधानमंत्री है। जब आपका लग्नेश प्रसन्न, मजबूत और सुदृढ़ होता है, तो आपकी शेष कुंडली स्वाभाविक रूप से संतुलन और शक्ति के साथ कार्य करती है।

<https://astroarpitanath.com/hindi/lagnesh-in-kundli/>

ज्योतिष केवल मार्गदर्शन के लिए प्रदान किया जाता है। जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए, कृपया किसी योग्य पेशेवर से परामर्श लें।